2009–10

प्रशिक्षण सामग्री

डी.आर.जी. / बी.आर.जी.
(प्रशिक्षण)

पठन कौशल विकास

कक्षा–1 के लिए

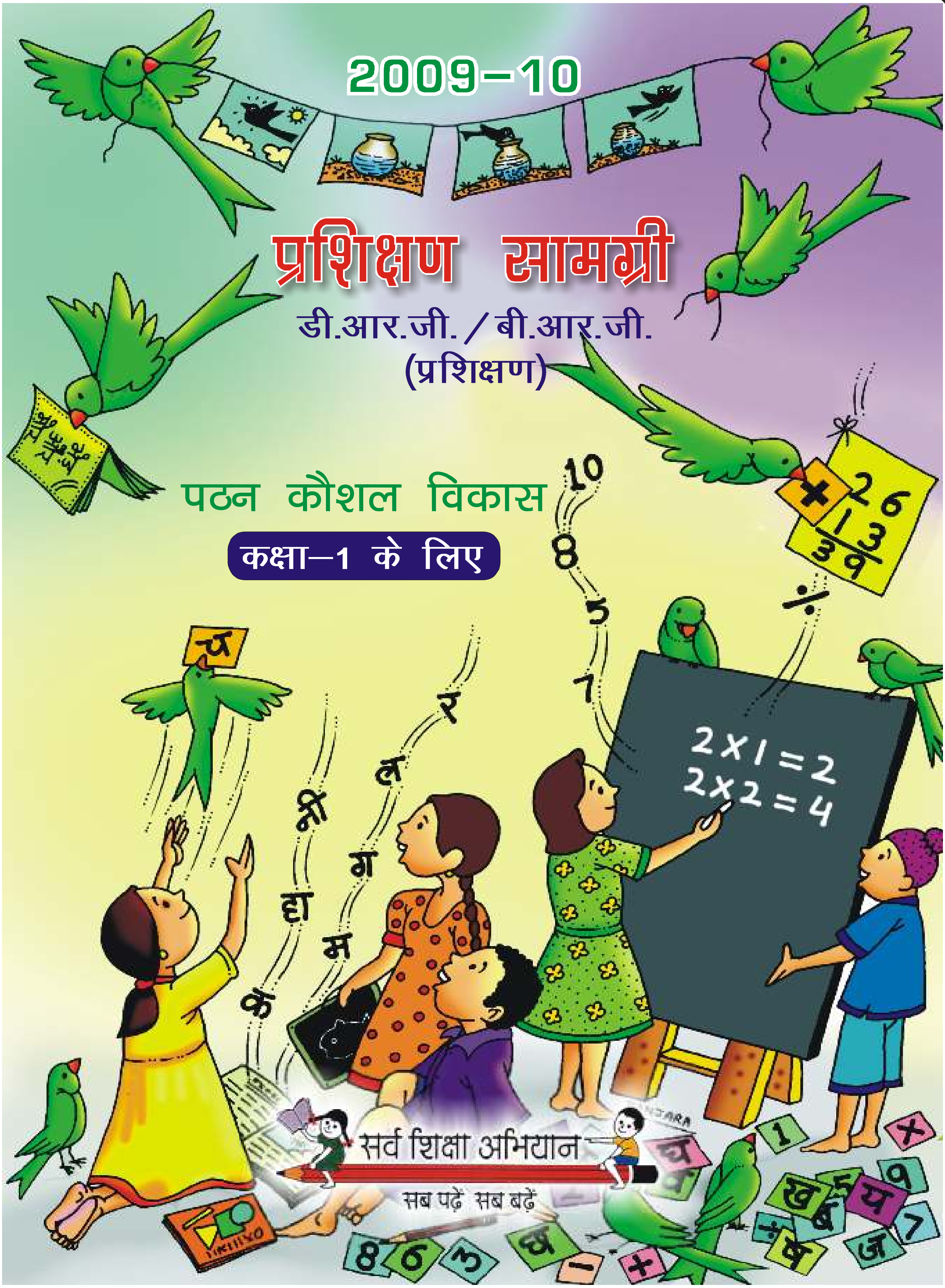

कार्यक्रम के बारे में

प्रारम्भिक स्तर पर भाषा का विकास

बच्चों को समझना: नई कक्षा की शुरुआत में बच्चे बहुत उत्साहित रहते हैं। नया साल, नई कक्षा, नये अध्यापक, नई किताबें और सीखने के लिये नई–नई चीज़ें। ऐसे में एक शिक्षक के लिये, यह बहुत ज़रुरी है कि वह 'पढ़ाने' से पहले बच्चों से अच्छी तरह परिचित हो जाये। बच्चों को जानने के लिये, उन्हें व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से भी जानना जरुरी है। हमें समझना होगा कि उनकी पसंद क्या है? वे किस चीज़ के बारे में बात कर सकते हैं और क्या–क्या कर सकते हैं?

हर बच्चे की अपनी–अपनी विशेषताएं होती हैं। बच्चों पर ध्यान देकर, उनकी बातें सुन कर, उनसे बातें करके, उन्हें 'सोचने और करने' के लिये अवसर दें तो बच्चों को अच्छी तरह से समझा जा सकता है।

बातचीत का महत्वः भाषा की क्षमता को बढ़ाने की दष्टि से, बच्चों द्वारा प्रयोग की जा रही शब्दावली, वाक्य विन्यास और विषय का चुनाव हमें उनके सोचने की प्रक्रिया के बारे में संकेत देते हैं। इन से शिक्षक को यह समझने में भी मदद मिलती है कि कौन सी योजना या गतिविधि बच्चों के लिये उपयोगी है?

मूलभूत आवश्यकता : भारत में सामान्यतः बच्चों के स्कूल में आने से पहले ही उन में भाषा की क्षमताएं कुछ हद तक विकसित होती हैं, ख़ासकर मौखिक क्षमताएं। उन्हें अपने निकट के वातावरण (घर, दोस्त आदि) के बारे में जानकारी होती है। लेकिन हमारे स्कूलों में अधिकतर बच्चे ऐसे हैं जिन्हें पढ़ने के लिये पुस्तकें पहले कभी उपलब्ध नहीं हुई होतीं। न ही उनके सामने किताबें पढ़ने का उदाहरण रहा होता है। इसलिए शुरुआती कक्षाओं में हमें ऐसी गतिविधियाँ करवानी होंगी और ऐसा वातावरण बनाना होगा जो उन्हें पुस्तकों और पढ़ाई की दुनिया में शामिल होने को प्रेरित करे और इस में उन की सहायता करे।

भाषा को विकसित करने वाले वातावरण के निर्माण के लिये आवश्यक बिन्दुः

- बच्चों के पढ़ने और देखने के लिये आयु के अनुसार सुन्दर चित्रों वाली पुस्तकें और पठन सामग्री उपलब्ध हों, जिनका बच्चे अपनी रुचि के अनुसार चयन कर सकें।
- बच्चे अच्छे पाठक बन सकें इसके लिए उन्हें कहानी सुनाना बहुत आवश्यक है, ताकि बच्चे पात्रों, घटनाओं, पष्ठभूमि और कहानी के प्रवाह से भली भाँति परिचित हो जायें।
- बच्चों को पुस्तक अपने आप सम्भालने, खोलने, बंद करने का अवसर देना चाहिये ताकि वे पुस्तक का उपयोग करने की प्रक्रियाओं से परिचित हो जायें।
- शिक्षक बच्चों को स्पष्ट उच्चारण और विराम चिन्हों को ध्यान में रखते हुये पढ़कर सुनायें। ताकि बच्चों को 'पढ़ने के प्रभावशाली तरीक़े' के बारे में पता चले। शिक्षक स्पष्ट उच्चारण के साथ–साथ हर शब्द के नीचे उँगली रखकर पढ़े ताकि बच्चे शब्द की ध्वनि और चिन्ह में रिश्ता स्थापित कर सकें और साथ ही उस शब्द को पूरी कहानी के संदर्भ में भी समझ सकें।

- बातचीत और चर्चा के माध्यम से कहानी को असल ज़िन्दगी के अनुभवों से जोड़ें।

बच्चों को अपने विचार स्वतंत्र होकर लिखने/चित्रित करने का मौक़ा देकर उनकी लिखने की क्षमताओं का विकास करें।

- अक्षर और शब्दों के खेल करवायें ताकि बच्चों को खेल–खेल में सहज रुप से शब्दों, वाक्यों को तोड़कर पढ़ने और समझने की क्षमता आ जाये।
- हमारे लिये सबसे बड़ी चुनौती है प्राथमिक कक्षा में साल भर के लिये ऐसी प्रभावशाली गतिविधियाँ बनाना जिन से बच्चों की क्षमताओं का विकास हो। इस के साथ ही प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत रुप से कक्षा में, और बड़े और छोटे समूहों में सहभागिता बहुत ही ज़रुरी है। यह सब चीज़ें मिलकर एक दिन बच्चों को आत्मविश्वासी, सक्षम और जिज्ञासु प्रवक्ता, पाठक, लेखक और श्रोता बना देंगी।

हमारा लक्ष्य :

कक्षा	बोलना	पढ़ना	लिखना	गणित
कक्षा 1	बिना झिझक अपने मन से किसी भी विषय पर बातचीत करें	स्तर अनुसार पठन सामग्री समझ के साथ पढ़ लें	अपने मन की बात छोटे वाक्य में लिख लें	1 से 100 तक की संख्याओं का ज्ञान। दो अंकीय जोड का ज्ञान
कक्षा 2	बिना झिझक अपने मन से किसी भी विषय पर बातचीत करें	स्तर अनुसार पठन सामग्री समझ के साथ पढ़ लें	अपने मन की बात वाक्य में लिख लें	999 तक की संख्याओ का ज्ञान, 10 तक का पहाड़ा, एक अंकी गुणा–भाग

कुछ ज़रूरी बातें : 'पढ़ने' के संदर्भ में

- हर बच्चे की अपनी विशेषताएं व कुछ समान प्रवतियाँ होती हैं, बच्चों पर ध्यान देकर, उनकी बातें सुनकर, उनसे बातें करके, उन्हें सोचने और करने के लिए अवसर दें तो बच्चों को अच्छी तरह से समझा जा सकता है।
- बच्चे और शिक्षक के मध्य आत्मीयता का रिश्ता होना चाहिए। शिक्षक को चाहिए कि वह बच्चों में विश्वास रखे।
- कक्षा में चार्ट, बाल साहित्य, 'पढ़ने का कोना' आदि संसाधन हों और इन संसाधनों का बच्चे निरन्तर सीखने में उपयोग करें।
- शिक्षक ध्यान रखे की चर्चा की शुरुआत रोचक ढ़ंग से हो। बच्चों की बातों से अपनी बातों को जोड़ें। बातचीत अगर संदर्भ से भटक रही हो तो उचित सवालों के द्वारा उसे संदर्भ से जोड़ें। हर बच्चे को महसूस कराएं कि उनकी बात महत्वपूर्ण है। बच्चों को बोलने के लिए प्रेरित करें।
- बच्चों को अधिक मात्रा में मुद्रित सामग्री उपलब्ध कराई जाए। (ये पुस्तकें भी हो सकती हैं अथवा बच्चों के द्वारा निर्मित चार्ट भी।)
- बच्चों को हर दिन कुछ समय किताबों के साथ अकेला छोड़ दें। बच्चे खुद से अपनी पसंद की किताब चुनें तथा पढ़ने की कोशिश करें। शिक्षक देखे कि बच्चे किताब को पढ़ने की कोशिश कर रहे हैं या नहीं।
- 'रिडिंग कॉर्नर' में पुस्तकें बदलती रहें। बच्चों को पुस्तक अपने आप सम्भालने, खोलने व बंद करने का अवसर देना चाहिए ताकि वे पुस्तक का उपयोग करने की प्रक्रियाओं से परिचित हो जायें। बच्चे पढ़ने के बाद अपने अनुभव अगर शिक्षक के साथ बांटना चाहते हैं तो शिक्षक को उसके लिए तैयार रहना चाहिए।
- **बातचीत करते समय क्या न करें:**
  - ➢ बच्चों के साथ टोका–टाकी न करें। अगर बच्चे बोलते समय 'अपनी बोली' का प्रयोग करते हैं तो उन्हें बोलने दें।
  - ➢ पूर्वाग्रह को बातचीत में स्थान न दिया जाए।
  - ➢ शिक्षक अपनी बात बच्चों पर न थोपें।
  - ➢ इस बात का ध्यान रहे कि बातचीत का सत्र बहुत लम्बा न हो।

अगर आप उपयुक्त बिंदुओं पर ध्यान दें तो आप पाएंगे कि आपकी कक्षा में बच्चों का स्तर निरंतर बढ़ रहा है और उनकी सहभागिता भी बढ़ रही है।

दैनिक गतिविधियाँ-भाषा

कक्षा में की जाने वाली गतिविधियाँ।	
आओ बातें करें	➢ रोज़ाना कक्षा में बच्चे से किसी विषय पर बातचीत करें। बातचीत से सम्बंधित कुछ गतिविधियाँ आगे दी गई हैं
कहानी सम्बंघित गतिविधि	➢ कहानी सुनाना ➢ कहानी को ज़ोर-ज़ोर से पढ़ना ➢ उंगली रखकर पढ़ना ➢ गपशप ➢ बच्चों को बारी-बारी से पढ़ने का मौक़ा दें ➢ बच्चों द्वारा बोले गये शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखें और उन्हें पढ़कर सुनाएं
कुछ बनाओ	➢ कक्षा में पढ़ी गई कहानी पर चित्र बनाना या काग़ज पर या हरी पट्टी पर अपने मन से कुछ बनाना
खेल-खेल में	➢ अक्षर या शब्द सम्बंधित खेल
स्वतंत्र पढ़ने का समय	➢ बच्चे अपनी मर्ज़ी से किताब उठाएं, चित्रों को देखें, उन्हें पढ़ने की कोशिश करें। बच्चे एक साथ बैठकर उन किताबों/चित्रों पर बातचीत करें।

कक्षा का संचालन :

- कुछ कार्य बड़े समूह में होंगे।
- बड़े समूह में भी सभी बच्चों को बारी–बारी से गतिविधियाँ करने का मौक़ा दें।
- छोटे समूह में काम करने के लिए स्तर के अनुसार बाँट दें।
- लेखन : सभी एक साथ कर सकते हैं। चित्र के आधार पर बच्चों को लिखने को कहें।
- आगे के पन्नों में इसकी विस्तत जानकारी दी गई है।

दैनिक गतिविधियों के मुख्य बिन्दु

कक्षा में चर्चा करते समय कुछ बातें याद रखें :

- **तैयारी** : बच्चों की चर्चा शुरु करने के पहले पूर्व तैयारी कर लें – जैसे विषय के ऊपर आप कुछ वाक्य ख़ुद बोलें।
- विषय का चुनाव बच्चों के साथ मिलकर करें, ताकि सब बच्चें चर्चा में भाग लेने के लिए उत्साहित रहें।
- चर्चा बहुत देर तक न करें, इससे बच्चों की सहभागिता बनी रहेगी।
- सभी बच्चों को अपनी तरीक़े से भाग लेने दें। अगर कोई बच्चा किसी विषय की चर्चा में भाग न ले तो उन्हें बहुत ज़ोर न दें।
- बातचीत के बाद उसको ज़रुर समेटें। बातचीत में जो भी वाक्य बोले गए हैं उसे दोहराएं। यह आप लिखित या मौखिक रुप में कर सकते है।

स्वतंत्र रुप से किताब पढ़ना :

रोज़ाना बच्चो को किताबों के साथ अकेला छोड़ दें। बच्चे ख़ुद से अपनी पसन्द की किताब चुनें तथा उन्हें पढ़ने की कोशिश करें। शुरू में बच्चे चित्र को देख कर आकर्षित होंगे पर धीरें–धीरें जैसे उन्हे समझ में आयेगा कि किताबों में एक घटना क्रम है वह चित्रों को एक श्रंखला में देखेगें और उनको जानने की कोशिश करेगें। यह उत्सुकता पढ़ने की पहली सीढ़ी है।

कुछ बनाओ :

पढ़ने के साथ–साथ यह ज़रूरी है कि बच्चे जो भी पढ़ें उसके बारे में बोलें व लिखें। **'कुछ बनाओ'** लिखने की शुरूआत है, जिसके द्वारा बच्चे को पढ़ी हुई बातों को कागज़ में उतारने की कोशिश करते हैं। हर बच्चे को अलग–अलग चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चे चित्र के बारे जो भी कहें शिक्षक उन्हें चित्र के नीचे लिखें।

कहानी पढ़ना और उससे सम्बंघित गतिविधि के लिए एक कहानी को तीन दिन की निर्धारित कक्षा अवधि में इस्तेमाल करें। बच्चों को अच्छा पाठक बनाने के लिए उनके सामने पढने का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करना जरुरी है। रोज़ाना शिक्षक किसी एक कहानी को ज़ोर–ज़ोर से पढ़े फिर स्पष्ट उच्चारण के साथ एक–एक शब्द पर अंगुली रखकर पढ़े। बच्चों को भी पढ़ने का मौक़ा दें। इस समय सब बच्चों के पास एक जैसी कहानी होनी चाहिए। रोज़ाना यह गतिविधि करने से बच्चों में लिखित भाषा के स्वर व चिन्ह की पहचान बनेगी तथा कहानी को समझने की कोशिश करेगें।

कक्षा 1 के लिए शैक्षिक लक्ष्य

लक्ष्य	भाषा	गणित
पहला चरण अगस्त-सितम्बर	⇒ बच्चा सबके साथ घुल मिलकर गतिविधियों में भाग ले। ⇒ अपने बारे में बिना झिझक कुछ बोले। ⇒ हर बच्चे को किताबों से लगाव और उसके बारे में जानने की उत्सुकता हो।	पूर्व संख्या संबोध, संख्या आधारित कहानी और कविताओं पर बातचीत, चित्रो एवं परिवेश की वस्तुओं को गिनना
दूसरा चरण अक्टूबर-नम्बर	⇒ बच्चे चित्रों पर बातचीत कर सकें। ⇒ बच्चे किताबों को कैसे पढ़ते हैं इससे परिचित हो जाएें। ⇒ अक्षर के ध्वनि व चिन्ह की पहचान व उन्हें लिखना	1 से 100 तक की संख्याओं का ज्ञान
तीसरा चरण दिसम्बर-जनवरी	⇒ बच्चे किसी घटना पर अपनी बात बता सकें। ⇒ कहानी में आए हुए शब्दों को पहचान कर पढें। ⇒ अपने मन से कुछ शब्द लिखें।	1 से 20 तक की संख्याओं का साधारण जोड़ और घटाव
चौथा चरण फरवरी-मार्च	⇒ स्तरानुसार पठ्न सामग्री समझ के साथ पढ़ें। ⇒ अपने मन की बात छोटे वाक्यों में लिखें। ⇒ बिना झिझक अपने मन से किसी भी विषय पर बातचीत करें।	1 से 100 तक की संख्याओं का साधारण जोड़ और घटाव

इन संख्याओं को चार्ट के द्वारा गिनना तथा खोजना, लिखना, बड़ी तथा छोटी संख्याओं के बीच तुलना, इनको बढ़ते तथा घटते क्रम में लिखना।

**इस पन्ने की हस्तलिखित प्रति को अपनी कक्षा के दीवार पर चिपका दें।*

पहला चरण : भाषा

लक्ष्य

बच्चा सबके साथ घुल मिलकर गतिविधियों में भाग ले।
अपने मन से बिना झिझक के कुछ बोले।
हर बच्चे को किताबों से लगाव और उसके बारे में जानने की उत्सुकता हो।

कक्षा में रोज़ाना की जाने वाली गतिविधियाँ

आओ बातें करें :
शुरु में बच्चे बातचीत करने में हिचकिचाते हैं, इसलिए उन्हें रोचक खेल के माध्यम से कक्षा में सहजता से भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करें।
रोज़ाना बच्चों को उनके आसपास की चीज़ों अथवा परिवार के बारे में बातचीत करें जैसे – कहाँ रहते हैं? परिवार में कौन–कौन हैं? स्कूल आते समय क्या–क्या देखा? बच्चों की बताई हुई बातों को श्यामपट्ट पर लिखें और पढ़कर सुनाएं।

कहानी सम्बंधित गतिविधि :
कहानी सुनाना : पहले बच्चों से कहानी के बारे में बातचीत करें। कहानी के शीर्षक पर एवं आवरण पष्ठ पर दिए गए चित्र पर बातचीत करें। फिर कहानी को मैखिक सुनाएं
किताब पढ़ना : कहानी सुनाने के बाद शिक्षक ज़ोर–ज़ोर से, स्पष्ट उच्चारण एवं शब्दों के उतार–चढ़ाव के साथ किताब से कहानी पढ़कर सुनाए।
कहानी पर गपशप : बच्चों से कहानी पर गपशप करें। कहानी किसके बारे में थी? कहानी में क्या हुआ? बच्चों से बातें करें। कहानी के पात्रों के बारे में बच्चों से चर्चा करें।
कहानी पढ़नें के बाद कहानी से कुछ शब्द बोर्ड पर लिखें। पहले शिक्षक पढ़े फिर बच्चों को पढ़ने का मौका दें।

कुछ बनाओ :
रोज़ाना बच्चों को कहानी के बारे में चित्र बनाने को कहें। बच्चे चित्र बनाऐंगे एवं शिक्षक उससे पूछेंगे कि, 'क्या बनाया है?' बच्चे जो भी बोलें शिक्षक उसे चित्र के पास लिख दें।

खेल : रोज़ाना कुछ खेल खेलें, आगे कुछ सुझाव दिए गए हैं।

स्वतंत्र रूप से किताब पढ़ना :
रोज़ाना बच्चों को किताबों के साथ अकेला छोड़ दें। बच्चे खुद से अपनी पसन्द की किताब चुनें तथा उन्हें पढ़ने की कोशिश करें। शिक्षक देखें कि बच्चे किताब को सही ढ़ंग से पकड़ रहे हैं, पन्नों को एक–एक कर पलट रहे हैं तथा चित्रों को ध्यान से देख रहे हैं। ये गतिविधि बच्चे अकेले या समूह में कर सकते हैं।

काना-बाती मेरे साथी

सब बच्चे एक घेरे में बैठ जाएँ। एक बच्चा अपने साथी के कान में कोई शब्द या वाक्य फुसफुसाएगा। दूसरा बच्चा वही शब्द/वाक्य अपने बगल वाले बच्चे के कान में कहेगा। इस तरह यह सिलसिला सारे बच्चों से होकर पहले बच्चे तक पहुँचेगा। बच्चा बतायेगा कि उसने क्या सुना...। अब अगले बच्चे की बारी है...

रुमाल का कमाल

ताली बजाते बच्चे घेरे में बैठें। बैठने के बाद सब एक साथ कोई कविता या गीत बोलें। एक बच्चा रुमाल लेकर घेरे के चक्कर काटेगा और चुप से अपने किसी साथी के पीछे उसे रख देगा। अगर साथी को पता चल गया तो वह रुमाल उठाकर पहले बच्चे को पकड़ने के लिए उसके पीछे भागेगा। अगर भागने वाला बच्चा जल्दी से खाली जगह पर आकर बैठ गया तो वह बच सकता है और खेल आगे बढ़ सकता है।

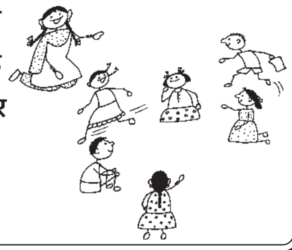

बिन बोले हम बोलें

सब बच्चे दो टीमों में बँट जाएँ और एक दूसरे से कुछ दूरी पर बैठें। पहली टीम का एक बच्चा दूसरी टीम के पास जायेगा। दूसरी टीम उसके कान में कोई भी एक शब्द बोलेगी। जैसे : खाँसना। बच्चे को अपनी टीम को बिना कुछ बोले, बिना कोई आवाज़ किये, दो-तीन मिनट में समझाना है कि उससे क्या कहा गया है। इसी तरह अगली बार दूसरी टीम का एक बच्चा पहली टीम के पास अपना शब्द लेने जायेगा और खेल आगे चलेगा। चाहें तो दोनों टीमों के नंबर ब्लैकबोर्ड पर लिख सकती है।

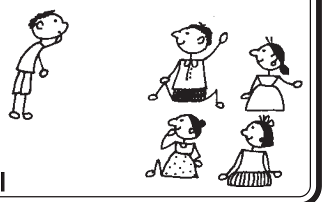

जंगल में आई बारात

''जंगल में लग गई आग रे...'' गाते हुए, ताली पीटते हुए, बच्चों से भी गाने के लिए कहें। इस पंक्ति के बाद किसी जानवर का नाम लें और उसे इस गाने में जोड़ें। जैसे—''घोड़ा भागा टप-टप-टप।'' अगला बच्चा सोचता है हाथी और कहता है—''हाथी भागा धमक-धमक'', या ''चूँ-चूँ करती चिड़िया भागी, खों-खों करता बंदर भागा।'' सब मिलकर गीत आगे बढ़ाएँ।

ढूंढो रंग

बच्चों की दो टीमें बनाइए। एक टीम में एक बच्चा और दूसरी टीम में बाकी सब। जी हाँ, यह है रंगों का खेल जिसमें दूसरी टीम के बच्चे पहली टीम के बच्चे से पूछेंगे, ''लाल, गुलाबी, नीला,पीला, कौन सा रंग सबसे रंगीला?'' पहला बच्चा अच्छी तरह सोचकर उस रंग का नाम लेगा जो आसपास आसानी से मिलने वाला नहीं। उदाहरण के लिए बच्चे ने कहा 'नीला' तो बाकी सब बच्चों को जल्दी से नीले रंग की कोई भी वस्तु ढूंढ़कर पकड़नी है। पहला बच्चा अपने बाकी साथियों के पीछे उन्हें छूने भागेगा। जो बच्चा नीले रंग की कोई भी वस्तु नहीं ढूँढ पाया, वह खेल से बाहर।

गाओ और घुमाओ

इस खेल के लिए एक रूमाल या दुपट्टा या चॉक कोई भी ऐसी चीज चाहिए जो बच्चे एक-दूसरे को दे सकें। सब बच्चे घेरे में खड़े हो जाएँ। टीचर दीदी उनकी तरफ पीठ करके ताली बजाना शुरू करें। इसके साथ ही रूमाल भी एक बच्चे के हाथ से दूसरे बच्चे के हाथ में चलना शुरू हो जाए। दीदी जैसे ही ताली बजाना रोक दे, जिस बच्चे के हाथ में रूमाल होगा, उसे कोई गीत, कविता, या चुटकुला सुनाना होगा।

दूसरा चरण : भाषा

लक्ष्य	**बच्चे चित्रों पर बातचीत कर सकें।** **किताबों को कैसे पढ़ते हैं बच्चे इससे परिचित हो जाएं।** **अक्षरों के ध्वनि व चिन्ह की पहचान।**
कक्षा में रोज़ाना की जाने वाली गतिविधियाँ	**आओ बाते करें :** रोज़ाना किताब के कुछ चित्र लें और बच्चों को उनको देखकर बोलने के लिए कहें।
	एक से अनेक : इस गतिविधि का विवरण आगे दिया हुआ हैं।
	कहानी सम्बंधित गतिविधि : **कहानी सुनाना :** पहले बच्चों से कहानी के बारे में बातचीत करें। कहानी के शीर्षक पर एवं आवरण पष्ठ पर दिए गए चित्र पर बातचीत करें। **कहानी को पढ़ना :** रोज़ाना शिक्षक ज़ोर–ज़ोर से, स्पष्ट उच्चारण एवं शब्दों के उतार–चढ़ाव के साथ किताब से कहानी पढ़कर सुनाएं। कहानी पढ़ने के बाद शिक्षक हर शब्द पर अंगुली रखकर कहानी को दुबारा पढ़े। **बच्चे पीछे-पीछे न दोहराएं।** **कहानी पर गपशप :** बच्चों के साथ कहानी पर गपशप करें। जैसे कहानी में कौन था, क्या हुआ आदि। बच्चों को ज़्यादा से ज़्यादा बोलने का मौक़ा दें। **गोला लगाओ :** शिक्षक कहानी के किसी भी एक पष्ठ में आए शब्दों को बोले व बच्चे अपनी किताब में उस शब्द को ढूंढ़कर गोला लगाएं। शिक्षक बच्चों को कहानी से सम्बंधित शब्द बोलने के लिए कहें। बच्चों द्वारा बोले गए शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखें। शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखे और पढ़कर सुनाएं।
	कुछ बनाना : बच्चों को कहानी से सम्बंधित या अपने आप कोई चित्र बनाने को कहें। चित्र बनाने के बाद बच्चों से पूछें, "क्या बनाया है?" बोले गये शब्द श्यामपट्ट पर लिखें और पढ़कर सुनाएं। बच्चों को चित्र के बारे में कुछ भी लिखने के लिए कहें।
	खेल : रोज़ाना कुछ अक्षरों के खेल खेलें। (याद रहे बच्चों को अक्षर रटवाने की कोशिश न करें – क से कबूतर। इस खेल का उद्देश्य केवल वर्ण चिन्हों से परिचय कराना है।) रोज़ाना 4 या 5 अक्षर के साथ खेलें। अगले दिन 4 या 5 नए अक्षर लें और पुराने अक्षर का भी अभ्यास करें।
	बच्चों को रोज़ स्वतंत्र रूप से किताबों को चुन कर पढ़ने की कोशिश करने दें।

एक से अनेक

श्यामपट पट पर कोई भी एक शब्द जैसे परिवार, खाना, फल, जानवर आदि लिखें व बच्चों का उससे सम्बन्धित कोई भी एक शब्द बोलने के लिए कहें। शिक्षिका बच्चों द्वारा बाले गए सभी शब्दों को श्यामपट पर लिखें।

अक्षर जोड़ी

हर अक्षर के दो कार्ड बनाइए। अक्षर कार्ड को उल्टा करके रख दीजिए। बच्चे दो कार्ड खोलेंगे। उन्हें देखकर फिर पलट कर रख देगें। इसी तरह कार्ड खुलते जायेंगे। हर बच्चे को मौक़ा दें। उदाहरण : यदि एक बच्चा 'ख' और ''ट'' का कार्ड खोलता है तो उसे पलटने के पहले याद करना होगा ख और ट के कार्ड कहाँ हैं? जो बच्चा सबसे ज्यादा अक्षर जोड़ियाँ खोलेगा, वह होगा विजेता।

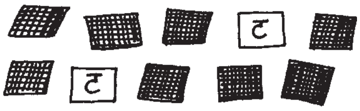

कौन जीता

अक्षर कार्ड को जमीन पर रख दें। कक्षा के सभी बच्चों को आमने-सामने दो लाइनो मे खड़ा कर दे। शिक्षक कोई भी एक अक्षर बोले, दोनों लाइनो मे से एक-एक बच्चा आए व वह ज़मीन पर रखें अक्षर कार्ड मे से वो अक्षर ढूढे। जिस समूह के बच्चे ने पहले बोले हुए अक्षर को ढूंढा उसे शिक्षक श्यामपट पर 10 नम्बर देगें और दूसरे समूह को 5 नम्बर दें। अन्त मे सभी अंको को जोड़ कर जीतें हुए समुह के लिए ताली बजाए।

खोजो मेरे अक्षर

सब बच्चे अपनी पुस्तक का कोई भी पन्ना खोलें। एक बच्चा अपना मनपसंद अक्षर बोले। जैसे उसने कहा 'ब', तो सभी बच्चे अपने-अपने पन्ने पर गिन कर बताएँगे कितने 'ब' हैं। जो बच्चा सबसे ज्यादा 'ब' वाले शब्द ढूँढ़ निकालेगा, वही जीतेगा। अलग-अलग अक्षर द्वारा यह खेल खेलें।

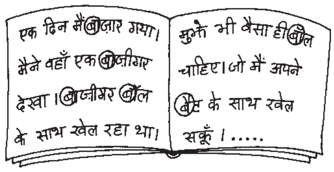

कट्टम-कट्टा

यह खेल बच्चे चौकड़ी (X) और शून्य (0) से खेलते हैं। लेकिन इसे अक्षर से भी खेला जा सकता है। दो अक्षर जैसे 'प' और 'न' ले लें और खेलें। चित्र में दिखाए गए चौरस की तरह आप भी एक चौरस बनाकर खेलना शुरू कर दें।

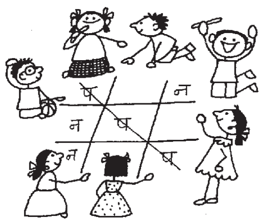

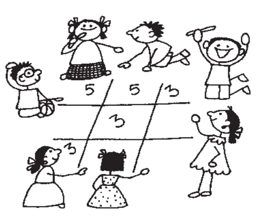

❖इस खेल को अंकों में भी खेला जा सकता है।

अक्षर मिलाओ

ज़मीन पर खाने बनाकर कुछ अक्षर लिखें। बच्चों के बीच बहुत सारे अक्षर कार्ड रख दें। हर बच्चा एक अक्षर कार्ड उठायेगा और उसी अक्षर को ज़मीन पर ढूंढकर सही खाने में रखेगा।

तीसरा चरण : भाषा

लक्ष्य	बच्चे किसी घटना पर अपनी बात बता सकें। कहानी में आए हुए शब्दों को पहचान कर पढ़ें। अपने मन से कुछ शब्द लिखें।

कक्षा में रोज़ाना की जाने वाली गतिविधियाँ

आओ बाते करें :

शिक्षक हर दिन कक्षा में एक घटना के बारे में बोले और बच्चों के साथ बातचीत करें। कुछ दिन बाद शिक्षक बच्चों को कहें कि घर से (माता–पिता) व दोस्तों से पूछकर आएं और कक्षा में ख़बर सुनाएं। हर दिन अलग–अलग बच्चों को यह ज़िम्मेदारी दें। इस प्रक्रिया में जो बच्चे शामिल नहीं हो रहे हैं उन पर विशेष ध्यान दें।

कहानी सम्बंधित गतिविधि :

कहानी सुनाना : पहले बच्चों से कहानी के बारे में बातचीत करें। कहानी के शीर्षक पर एवं आवरण पष्ठ पर दिए गए चित्र पर बातचीत करें।

कहानी को पढ़ना : रोज़ाना शिक्षक ज़ोर–ज़ोर से, स्पष्ट उच्चारण एवं शब्दों के उतार–चढ़ाव के साथ किताब से कहानी पढ़कर सुनाएं। कहानी पढ़ने बाद शिक्षक हर शब्द पर अंगुली रखकर कहानी को दुबारा पढ़े। **बच्चे पीछे-पीछे न दोहराएं।**

कहानी पर गपशप : बच्चों के साथ कहानी पर गपशप करें। जैसे कहानी में कौन था, क्या हुआ आदि। बच्चों को ज्यादा से ज्यादा बोलने का मौक़ा दें।

गोला लगाओ : शिक्षक कहानी के किसी भी एक पष्ठ में आए शब्दों को बोले व बच्चे अपनी किताब में उस शब्द को ढुढ़कर गोला लगाएं।

शिक्षक बच्चों को कहानी से सम्बंधित शब्द बोलने के लिए कहें। बच्चों द्वारा बोले गए शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखें। शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखे और पढ़कर सुनाएं।

कुछ बनाना :

बच्चों से कहानी से सम्बंधित चित्र बनाने को कहें। बच्चे चित्र बनाएं और चित्र पर कुछ लिखें। रोज़ाना कुछ बच्चों से जो उन्होंने लिखा है, उस पर कक्षा में कुछ बोलने को कहें।

शब्द खेल : आगे कुछ सुझाव दिए गए हैं। आप ऐसी गतिविधियाँ खुद से बना सकते हैं।

बच्चों को रोज़ स्वतंत्र रूप से किताबों को चुन कर पढ़ने की कोशिश करने दें।

शब्द बनाओ

पाँच या छः अक्षर लिख दें... देखें इनमें शब्द बन सकते हैं कि नहीं... जैसे

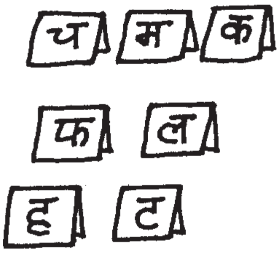

मिलते जुलते शब्द

आप कई मिलते-जुलते शब्द बोलें। जैसे कालू, भालू, आलू...और बच्चों को कहें कि ऐसे ही मिलते-जुलते शब्द बतायें। अलग-अलग शब्दों से यह खेल खेलिये।

शब्द अंताक्षरी

अंताक्षरी यानि अंतिम अक्षर का खेल। एक बच्चा अपना मनपसंद शब्द बोले, 'अमरूद'। अब अगला बच्चा इस शब्द के आख़िरी अक्षर से, यानि 'द' से नया शब्द बोलेगा, जैसे 'दवा'। और इस तरह खेल आगे बढ़ता जाएगा। मज़ेदार बात यह है कि बच्चे खुद भी इसे खेल सकते हैं। दो टीमें तैयार कीजिए और शुरू हो जाइए !

जैसा नाम, वैसा दाम

कुछ अक्षर चुनिए और हर अक्षर को एक कीमत दीजिए। अब इन अक्षरों से शब्द बनाइए। बच्चों से कहिए हर अक्षर की कीमत जोड़कर पूरे शब्द की कीमत लिखें।

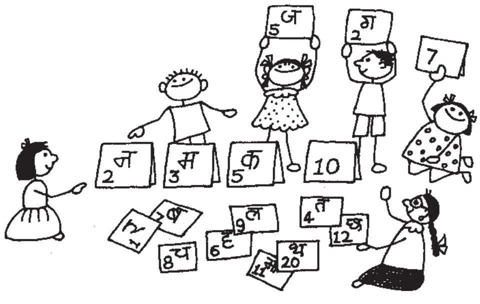

अक्षर से शब्द

एक अक्षर से अलग-अलग शब्द बनायें। बच्चों को अलग-अलग अक्षर पहचानने को कहें। इस तरह के कार्ड आप बना सकते हैं। शब्दों से बच्चे अक्षर पहचानेगें।

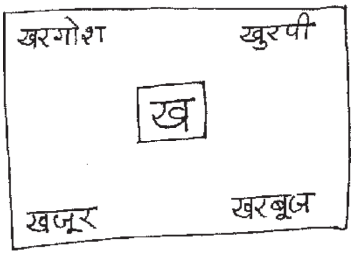

शब्द खज़ाना

बच्चों को कोई एक अक्षर दें। उनसे कहें इस अक्षर से शुरू होने वाले शब्द बोलें। जैसे, एक बच्चे के पास अक्षर आया 'क'। वह बोल सकता है—कानपुर, कान, कान्ता, कुन्ती, कप, कविता। हर बार बच्चों को अलग अक्षर दें। इसके बाद इन शब्दों को ब्लैक बोर्ड पर लिखें और बच्चे उन्हें सामूहिक रूप से पढ़े। हैं न शब्दकोष तैयार करने का अनोखा तरीका !

शब्दों के खेल

चौथा चरण : भाषा

लक्ष्य	
	स्तरानुसार पठ्न सामग्री समझ के साथ पढ़ें। **अपने मन की बात छोटे वाक्यों में लिखे।** **बिना झिझक अपने मन से किसी भी विषय पर अच्छी तरह से बातचीत करें।**

कक्षा में रोज़ाना की जाने वाली गतिविधियाँ

आओ बातें करें : प्रतिदिन बच्चों से किसी विषय/चित्र या घटना पर बातचीत करते रहें।

कहानी सम्बंधित गतिविधि :

कहानी सुनाना : पहले बच्चों से कहानी के बारे में बातचीत करें। कहानी के शीर्षक पर एवं आवरण पष्ठ पर दिए गए चित्र पर बातचीत करें।

कहानी को पढ़ना : रोज़ाना शिक्षक ज़ोर–ज़ोर से, स्पष्ट उच्चारण एवं शब्दों के उतार–चढ़ाव के साथ किताब से कहानी पढ़कर सुनाएं।

कहानी पर गपशप : बच्चों के साथ कहानी पर गपशप करें। जैसे कहानी में कौन था, क्या हुआ आदि। बच्चों को ज़्यादा से ज़्यादा बोलने का मौक़ा दें।

कहानी अपने शब्दों में सुनाना : बच्चों को कहानी पढ़ने को कहें। कहानी पढ़ने के बाद बच्चे उसे अपने शब्दों में कक्षा में सुनाए।

लिखने की शुरूआत :

बच्चे कहानी पढ़कर इससे सम्बंधित चित्र बनाएं। आप हर बच्चे से पूछें कि **क्या बनाया है?** बताये हुए शब्द चित्र के पास लिखें। बच्चे यह गतिविधि कॉपी, ज़मीन या हरी पट्टी पर कर सकते हैं। याद रखें कि हर बच्चे को अपने मन से बनाने दें। आप उनसे उसके बारे में ज़रूर पूछें।

शब्दों के खेल :

आगे दिए गये कुछ शब्द/वाक्य के खेल प्रतिदिन कराएं। इस तरह की गतिविधि शिक्षक तैयार करें और कक्षा में कराएं।

मिलकर पढ़ें :

हर दिन बच्चों को उनकी पसन्द की किताबों के बीच रहने दें। बच्चे अपनी पसन्द की कहानी छाँटें और उसे अपने आप या दोस्तों के साथ मिलकर पढ़ें। कुछ समय बाद बच्चों द्वारा पढ़ी गई कहानियाँ अपने साथियों को सुनाने को कहें। शिक्षक प्रत्येक समूह में जाकर थोड़ी देर बैठे और पढ़ने में मदद करे।

स्वतंत्र रुप से किताब पढ़ना

रोज़ाना बच्चों को किताबों के साथ अकेला छोड़ दें। बच्चे खुद से अपनी पसन्द की किताब चुनें तथा उन्हें पढ़ने की कोशिश करें। शिक्षक देखें कि बच्चे किताब को पढ़ने की कोशिश कर रहे हैं या नहीं।

बच्चों को रोज़ स्वतंत्र रूप से किताबें पढ़नें दें।

क्यों अच्छे लगते हैं?

शिक्षक बच्चों से पूछें कि परिवार में उनके सबसे प्रिय कौन हैं और क्यों हैं? जैसे : आपके परिवार में आप को कौन अच्छे लगते हैं? बच्चे उत्तर दें सकते हैं 'चाचा' शिक्षक बच्चे से पूछें कि चाचा क्यों अच्छे लगते हैं? बच्चे का उत्तर हो सकता है, 'चाचा इसलिये अच्छे लगते हैं कि वह पढ़ने के लिये ढ़ेर सारी किताबें लाते हैं?

मनपसंद

बच्चे गोल घेरे में बैठ जाएँ। आप कहिए ''सब बारी-बारी झटपट अपने मनपसंद फूल का नाम बताएँ।'' जो बच्चे नाम बताने में देर करेंगे या सोचते रह जाएँगे, वे हो जाएँगे खेल से बाहर। खेल आगे बढ़ेगा... फूलों के नाम, रंगों के नाम, शहरों के नाम... मिठाई के नाम... दोस्तों के नाम या फिर मनपसंद खाने की चीज़ों के साथ भी यह खेल हो सकता है। जो कहा जा रहा है उसे लिखें।

घूमो-पढ़ो-करो

एक कमरें में अलग-अलग स्थानों पर कुछ शब्द लिख दें, जैसे - हंसना, रोना, गाना आदि। बच्चे को कहें कि वे ताली की आवाज़ पर चलना शुरु करें और जैसे ही ताली रुके बच्चों के सामने जो भी शब्द नज़र आये, उसी अनुसार वे उसका पालन करे। जैसे- बच्चा ताली की आवाज़ पर रुकता और उसके सामने शब्द 'हंसना' लिखा मिलता है तो बच्चा 'हंसने' लगे, अगर रोना लिखा है तो बच्चा रोने लगे। यह खेल व्यक्तिगत एवं समूह में कर सकते हैं।

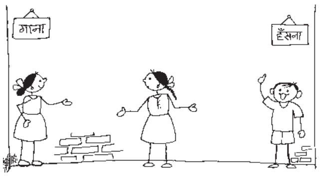

सोच-सोच सूची

बच्चों को सूची यानि लिस्ट बनाने में बड़ा मज़ा आता है। तो फिर देर कैसी, हो जाइए शुरू ! बच्चों के छोटे-छोटे समूह बनाइए। ध्यान रहे हर समूह में कम से कम एक बच्चे को लिखना आता हो। हर ग्रुप को सूची बनाने के लिए अलग-अलग विषय दीजिए। जैसे : जानवरों के नाम, सबके भाई-बहनों के नाम, लकड़ी की चीज़ें, खाने की मनपसंद चीज़ें, शादी के घर में ज़रूरी चीज़ें...। पहले ये नाम बच्चे बोलें, फिर हर समूह अपनी सूची लिखे। इन सब सूचियों को आप दीवार पर लगा सकते हैं। अपनी ही सोच और सूची देखकर बच्चे हैरान भी होंगे और खुश भी। यह क्रिया आप रोज़ करेंगे तो देखते ही देखते दीवारें खचाखच भर जायेंगी।

आओ फिर से बनाये कहानी

कुछ बच्चों की परिचित कहानी या कविता लें। उन्हें बड़े अक्षरों में लिख कर उनकी पक्ति काट लें। अब बच्चों को उन्हें दुबारा क्रम में लगाने को बोले।

आप ने क्या देखा

- एक बच्चे को कक्षा से बाहर जाने को कहें। बाहर क्या हो रहा है, देखे और उसे कक्षा में आकर बताए।
- बाक़ी सभी बच्चे उस बच्चे द्वारा बताई हुई वस्तु के बारे में प्रश्न पूछें। जैसे :

बच्चे : क्या देखा?

उत्तर : साइकिल देखी।

बच्चे : साइकिल किस रंग की थी?

उत्तर : साइकिल काले रंग की थी।

जो भी वाक्य/शब्द कक्षा में बच्चों ने बोले हैं। बच्चों को यह लिखने को बोलें।

कार्यक्रम का कैलेण्डर

प्रशिक्षण

मुख्य सन्दर्भदाता समूह
२३ से २४ जून,०६

जिला सन्दर्भदाता समूह
१ से ३ जुलाई,०६
६ से ८ जुलाई,०६
६ से ११ जुलाई,०६
१३ से १५ जुलाई,०६

ब्लाक सन्दर्भदाता समूह
२० से २२ जुलाई,०६
२३ से २५ जुलाई,०६

शिक्षामित्र / शिक्षक
२६ से ३१ जुलाई,०६
६ से ८ अगस्त,०६
१० से १२ अगस्त,०६
१७ से १६ अगस्त,०६
२० से २२ अगस्त, ०६

२४ अगस्त,०६ (सोमवार) से राज्य के सभी विद्यालयों मं कार्यकम का शुभारम्भ

शिक्षामित्र / शिक्षक हेतु फीडबैक बैठके - एक दिवसीय

	कक्षा
अक्टूबर,०६	
२८ और २६	१
३० और ३१	२
जनवरी,**२०१०**	
१३ और १४	१
१५ और १६	२
मार्च,२०१०	
२६ और २७	१
२६ और ३०	२

नोट :- कक्षा १ और २ के शिक्षामित्र / शिक्षक बारी–बारी 50–50 के बैच में ब्लाक पर एकत्र होगें।

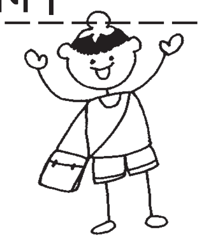

सन्दर्भदाता समूह द्वारा अनुश्रवण के अनुभवों के आदान-प्रदान हेतु बैठकें

जिला सन्दर्भदाता समूह

१२ और १३ नवम्बर,०६
२६ और ३० जनवरी,२०१०
१४ और १५ अप्रैल,२०१०

ब्लाक सन्दर्भदाता समूह
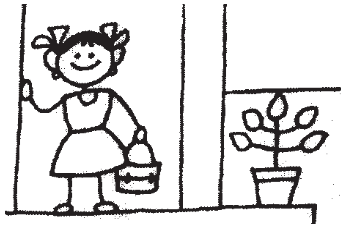
०६ और ०७ नवम्बर,०६
२२ और २३ जनवरी,२०१०
०५ और ०६ अप्रैल,२०१०